IJARASEM

ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 11, Issue 6, November - December 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.583

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 6, November-December 2024 |

हिंदी साहित्य में लोक साहित्य का महत्व और उसकी स्वीकार्यता

उग्रसेन सिंह
सहायक आचार्य, हिंदी साहित्य (विद्या संबल)
राजकीय महाविद्यालय, राजलदेसर (चूरू)

सारांश

लोक साहित्य भारतीय समाज का एक अभिन्न हिस्सा रहा है, जो समाज की मौलिक चेतना, सांस्कृतिक परंपराओं, आस्थाओं और अनुभवों का प्रतिफलन करता है। यह साहित्य मुख्यतः सामान्य जनों द्वारा मौखिक रूप से रचित और संप्रेषित किया जाता है, जो समाज की वास्तविकताओं, संघर्षों और जीवनधारा को जीवंत रूप में प्रस्तुत करता है। हिंदी साहित्य में लोक साहित्य का अत्यधिक महत्व है, क्योंकि यह न केवल साहित्यिक विधाओं की विविधता को प्रदर्शित करता है, बल्कि समाज की सामाजिक और सांस्कृतिक धारा के विकास में भी योगदान करता है। यह शोध पत्र हिंदी साहित्य में लोक साहित्य के महत्व का विश्लेषण करता है, जिसमें लोक गीत, लोक कथाएँ, जनकाव्य, लोकनृत्य, प्राचीन नाटक और अन्य मौखिक काव्य रूपों को शामिल किया गया है। हिंदी लोक साहित्य का इतिहास प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक फैला हुआ है और इसमें अनेक लोककाव्य, कहानियाँ, गीत, मुहावरे, नाटक और कथाएँ निहित हैं जो जनमानस की भावनाओं, विचारों और जीवन की सच्चाईयों को स्वरूपित करती हैं। शोध पत्र का उद्देश्य यह भी है कि किस प्रकार लोक साहित्य को हिंदी साहित्य में मुख्यधारा के रूप में स्वीकार किया गया और उसके विभिन्न रूपों ने हिंदी साहित्य की पहचान को कैसे प्रभावित किया। इस शोध पत्र में लोक साहित्य की सामाजिक स्वीकार्यता और उसकी वर्तमान स्थिति पर भी चर्चा की गयी है, विशेषकर समाज में उसकी भूमिका, शिक्षा, जनसंचार और सांस्कृतिक आंदोलन में इसके योगदान पर। लोक साहित्य के माध्यम से व्यक्ति और समाज के बीच एक जुड़ाव बनता है, जो सामाजिक समरसता, राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करता है। शोध पत्र यह भी विचार करता है कि कैसे आधुनिक हिंदी साहित्य में लोक साहित्य की पहचान को पुनः स्थापित किया गया है और इसके साहित्यिक मूल्य को किस प्रकार से सराहा गया है। इस शोध पत्र के माध्यम से हिंदी साहित्य में लोक साहित्य के योगदान और उसकी स्वीकार्यता पर एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करने का प्रयास किया गया है, जो न केवल साहित्यिक दृष्टि से, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

मूल शब्द – लोक साहित्य, सामाजिक स्वीकार्यता, मौलिक चेतना, सांस्कृतिक परंपरा

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 6, November-December 2024 |

प्रस्तावना :

लोक साहित्य किसी भी समाज की आत्मा को व्यक्त करने का सबसे प्रभावशाली माध्यम है। यह समाज के साधारण जनों द्वारा निर्मित साहित्य है, जो उनकी जीवनशैली, संघर्ष, आस्थाएँ, परंपराएँ और सांस्कृतिक धरोहरों को व्यक्त करता है। भारतीय समाज में लोक साहित्य की एक समृद्ध परंपरा रही है, जो न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी अत्यधिक प्रासंगिक है। विशेष रूप से हिंदी साहित्य में लोक साहित्य का एक अनूठा स्थान है, जो भारतीय जनमानस की सच्चाइयों, विचारधाराओं और संवेदनाओं का जीवंत रूप है। हिंदी लोक साहित्य का स्वरूप बहुआयामी है। इसमें लोक गीत, कथाएँ, मुहावरे, परंपरागत काव्य रूप, नृत्य, नाटक और अन्य मौखिक काव्य तत्व सम्मिलित हैं, जो भारतीय समाज के विभिन्न आयामों को उजागर करते हैं। लोक साहित्य की विशेषता यह है कि यह जनजीवन से जुड़ा हुआ है, इसलिए इसमें सामाजिक वास्तविकताओं, संघर्षों, मान्यताओं और जीवन के विविध पहलुओं का चित्रण किया जाता है। यह समाज के विभिन्न वर्गों, जातियों और संस्कृतियों के अनुभवों को अपनी रचनाओं में समेटता है, जिससे यह साहित्य अत्यधिक व्यापक और समृद्ध होता है। हिंदी साहित्य में लोक साहित्य का महत्व समय–समय पर बढ़ा है, क्योंकि यह न केवल समाज के विविध पहलुओं को प्रकट करता है, बल्कि उस समाज के साहित्यिक इतिहास को भी जीवित रखता है। इसका साहित्यिक मूल्य भी अत्यधिक है, क्योंकि यह साहित्य किसी विशिष्ट वर्ग या लेखकों की नहीं, बल्कि समग्र समाज की रचनाएँ हैं। इसके जरिए हम भारतीय समाज के बुनियादी विचारों और उसकी सांस्कृतिक धारा को समझ सकते हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य हिंदी साहित्य में लोक साहित्य के महत्व को उजागर करना और उसकी सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक स्वीकार्यता पर विचार करना है। इसके माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि कैसे लोक साहित्य ने हिंदी साहित्य को एक नया आयाम दिया और समाज में अपनी स्वीकृति प्राप्त की। साथ ही, यह शोध लोक साहित्य के वर्तमान स्थिति का भी विश्लेषण भी करता है कि आज के समय में इसकी भूमिका और स्वीकार्यता कितनी प्रासंगिक है।

उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध–पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य है–

- हिंदी साहित्य में लोक साहित्य के महत्व का विश्लेषण
- लोक साहित्य की स्वीकार्यता का अध्ययन
- हिंदी साहित्य में लोक साहित्य की भूमिका का मूल्यांकन
- आज के समाज में लोक साहित्य की प्रासंगिकता

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 6, November-December 2024 |

लोक साहित्य का परिभाषा और स्वरूप :

लोक साहित्य वह साहित्य है जो सामान्य जनसंघटन द्वारा मौखिक रूप में रचित और संप्रेषित किया जाता है। यह साहित्य किसी एक व्यक्ति द्वारा नहीं, बल्कि समग्र समुदाय, समाज और संस्कृति द्वारा निर्मित होता है, और यह समाज के मौलिक विश्वासों, मूल्यों, आस्थाओं और अनुभवों को व्यक्त करता है। लोक साहित्य का स्वरूप अत्यधिक विविध और बहुआयामी होता है, क्योंकि यह विभिन्न समाजों, संस्कृतियों और समयों के विचारों, भावनाओं और सांस्कृतिक धारा को व्यक्त करता है। इस साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक शिक्षा प्रदान करना भी है। लोक साहित्य की विशेषता यह है कि यह मुख्यतः मौखिक परंपरा के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी संचारित होता है, और इसमें कोई निश्चित लेखक या रचनाकार नहीं होता।

लोक साहित्य की अवधारणा और उसके प्रकार (लोक गीत, लोक कथाएँ, मुहावरे, लोकरंजन काव्य, आदि) :

लोक साहित्य की अवधारणा इस प्रकार है कि यह साहित्य आम जनमानस की कृतियाँ होती हैं, जो जीवन के विविध पहलुओं को प्रदर्शित करती हैं। इसके प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं–

- **लोक गीत** – लोक गीत समाज की भावनाओं, उत्सवों, दुख–सुख, प्रेम, और कष्टों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये गीत धार्मिक अनुष्ठानों, पर्वों, त्यौहारों, विवाह, जन्म और मृत्यु के अवसरों पर गाए जाते हैं। इनमें प्राचीन लोककाव्य रूपों का समावेश होता है, जैसे – हरियाणवी गीत, भोजपुरी गीत आदि।
- **लोक कथाएँ** – ये कहानी रूप में समाज के अनुभवों, ऐतिहासिक घटनाओं, वीरता और मिथकों का वर्णन करती हैं। लोक कथाएँ न केवल मनोरंजन का साधन होती हैं, बल्कि वे शिक्षा और नैतिकता का भी प्रसार करती हैं। इन कथाओं में प्राचीन परंपराओं और जीवन के सत्य का चित्रण होता है।
- **मुहावरे और कहावतें** – ये समाज के अनुभवों को संक्षिप्त और प्रतीकात्मक रूप में व्यक्त करते हैं। उदाहरण स्वरूप, ‘‘नाच न जाने आंगन टेढ़ा’’ जैसी कहावतें समाज के विचारों को सरल तरीके से व्यक्त करती हैं।
- **लोकरंजन काव्य** – यह काव्य रूप मुख्यतः मनोरंजन के उद्देश्य से रचित होता है और इसमें समाज के मजेदार या हास्य तत्वों को प्रमुखता दी जाती है। इसमें विभिन्न हास्य–व्यंग्य, नृत्य, गीत, कवि सम्मेलन इत्यादि शामिल होते हैं।

लोक साहित्य और शास्त्रीय साहित्य के बीच का अंतर :

लोक साहित्य और शास्त्रीय साहित्य दोनों साहित्यिक विधाओं में कुछ अंतर है, जो उन्हें एक–दूसरे से विशिष्ट बनाता है–

- **साहित्यिक स्रोत** – लोक साहित्य आम जन की रचनाएँ होती हैं, जबकि शास्त्रीय साहित्य विशेष रूप से संस्कृत, फारसी या अन्य शास्त्रीय भाषाओं में रचित और उच्च शिक्षित वर्ग द्वारा लिखा गया साहित्य होता है। लोक साहित्य का आदान–प्रदान मौखिक रूप से होता है, जबकि शास्त्रीय साहित्य लिखित रूप में होता है।
- **शैली और रूप** – लोक साहित्य में सरल भाषा, प्राकृतिक चित्रण और समाजिक मुद्दों पर आधारित काव्य रचनाएँ होती हैं, जो तात्कालिक जन–समाज की वास्तविकताओं से जुड़ी होती हैं। इसके विपरीत, शास्त्रीय साहित्य में जटिल भाषा, शास्त्रीयता और साहित्यिक अलंकारों का प्रयोग अधिक होता है, जो उच्च शैक्षिक और बौद्धिक समाज के लिए होता है।
- **विषयवस्तु** – लोक साहित्य सामान्य जन के जीवन, समस्याओं, संघर्षों, और सांस्कृतिक परंपराओं पर आधारित होता है, जबकि शास्त्रीय साहित्य अधिकतर धार्मिक, दार्शनिक, और शास्त्रों से जुड़ा होता है।

हिंदी लोक साहित्य के प्रमुख रूप और उनकी विशेषताएँ :

हिंदी लोक साहित्य में विभिन्न प्रकार के काव्य रूप पाए जाते हैं, जो समाज के विभिन्न पहलुओं को व्यक्त करते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख रूप और उनकी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

- **काव्य रूप** – हिंदी लोक साहित्य में विशेष रूप से भक्ति काव्य, वीरता काव्य, प्रेम काव्य और नैतिक शिक्षा काव्य की प्रधानता है। इन काव्य रूपों में भाषा की सरलता, प्रवाह और जनमानस से जुड़ाव की विशेषता होती है। उदाहरण के रूप में, सूरदास, मीरा, कबीर जैसे संतों के काव्य रूपों को लोक साहित्य के रूप में देखा जा सकता है।
- **लोक कथाएँ** – हिंदी लोक साहित्य में अनेक लोक कथाएँ प्रचलित हैं, जो नैतिक शिक्षा (Moral Lessons) देती हैं। इनमें मुख्य रूप से प्रेम कथा, वीरता की गाथाएँ, धार्मिक आख्यान, और जन सामान्य की समस्याओं से जुड़ी कथाएँ होती हैं।
- **लोक गीत** – हिंदी लोक गीतों में ठुमरी, चौती, भजन, आल्हा, बधाई, फाग आदि प्रमुख हैं। ये गीत विशेष अवसरों पर गाए जाते हैं और सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक विविधताओं का संगम होते हैं। इनमें मानव जीवन की सामान्य समस्याओं और अनुभूतियों का संगीतात्मक रूप में चित्रण होता है।

इन प्रमुख रूपों के माध्यम से हिंदी लोक साहित्य समाज की सोच, संस्कार और सांस्कृतिक धारा को संरक्षित करता है, जो आधुनिक साहित्य के लिए भी प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं।

हिंदी साहित्य में लोक साहित्य की स्वीकार्यता और भूमिका :

हिंदी साहित्य में लोक साहित्य की स्वीकार्यता ने समय–समय पर विशेष महत्व प्राप्त किया है। प्राचीनकाल से ही लोक साहित्य समाज की अभिव्यक्ति और संस्कृतिक धारा का प्रमुख स्रोत रहा है। यह साहित्य न केवल समाज के आम जन की सोच, उनकी समस्याओं और उनके संघर्षों को दर्शाता है, बल्कि यह समाज के सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक पक्षों को भी उजागर करता है। हिंदी साहित्य में लोक साहित्य का योगदान अनिवार्य रहा है, क्योंकि यह उस समय के समाज की वास्तविकताओं को शब्दों में पिरोने का कार्य करता है, जब शास्त्रीय साहित्य की पहुँच एक विशेष वर्ग तक सीमित थी। लोक साहित्य का महत्व इस अर्थ में भी है कि यह न केवल समाज की विविधताओं को समझने में मदद करता है, बल्कि यह एक सामूहिक चेतना और सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने का कार्य करता है। कालांतर में, हिंदी साहित्य में लोक साहित्य को अधिक स्वीकार्यता मिली, जब महान साहित्यकारों ने इसे अपनी रचनाओं में समाहित किया और इसे साहित्यिक धारा में प्रमुख स्थान दिया। लोक साहित्य की भूमिका समाज के सांस्कृतिक और साहित्यिक धारा को जीवंत बनाए रखने में अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।

हिंदी साहित्य में लोक साहित्य के स्थान की ऐतिहासिक समीक्षा :

हिंदी साहित्य में लोक साहित्य का स्थान एक ऐतिहासिक विकास को दर्शाता है। प्राचीनकाल में लोक साहित्य मुख्य रूप से मौखिक परंपरा पर आधारित था, जो सामान्य जन के बीच सृजित और संप्रेषित होता था। मध्यकाल में, विशेष रूप से भक्ति आंदोलन के दौरान, हिंदी लोक साहित्य को एक नया रूप मिला। संत कवियों ने जैसे कि कबीर, सूरदास, तुलसीदास और मीरा ने अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से समाज के आम जन से जुड़ने का प्रयास किया, जिससे लोक साहित्य का महत्व और स्वीकार्यता बढ़ी।

19वीं शताबदी में हिंदी साहित्य का पुनर्निर्माण हुआ और साहित्यिक चेतना को एक नई दिशा मिली। इस समय के प्रमुख लेखकों ने लोक साहित्य को न केवल महत्व दिया, बल्कि इसे साहित्यिक रूप में पेश किया। भारतेन्दु हरिशचंद्र, महादेवी वर्मा और जयशंकर प्रसाद जैसे साहित्यकारों ने लोक साहित्य को नए संदर्भ में प्रस्तुत किया और उसे हिंदी साहित्य की मुख्यधारा में स्थान दिलवाया। इसके बाद 20वीं शताबदी में लोक साहित्य की परंपरा ने और भी अधिक विस्तार लिया और यह अब शास्त्रीय साहित्य के समानांतर एक स्थायी स्थान बना चुका है।

लोक साहित्य की प्रमुख काव्य रचनाओं का साहित्यिक प्रभाव :

हिंदी लोक साहित्य की प्रमुख काव्य रचनाएँ, जैसे कि लोक गीत, भक्ति काव्य, और लोक कथाएँ, हिंदी साहित्य पर गहरे साहित्यिक प्रभाव डाल चुकी हैं। इन रचनाओं ने न केवल साहित्य के रूप को संवारा, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को भी उजागर किया। उदाहरण के लिए, कबीर की दोहों, सूरदास के पदों और मीरा के भजनों ने हिंदी साहित्य में भक्ति काव्य की एक नई परंपरा शुरू की, जो न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक विचारों को व्यक्त करती थी, बल्कि समाज के हर वर्ग की मानसिकता को भी प्रभावित करती थी।

इसी प्रकार, हिंदी लोक साहित्य की प्रमुख काव्य रचनाओं ने साहित्यिक शैलियों को नए आयाम दिए। इन रचनाओं में सामाजिक समरसता, प्रेम, भक्ति, न्याय, और धर्म के विचारों का समावेश था, जिसने हिंदी कविता को एक सामाजिक और मानवतावादी दृष्टिकोण प्रदान किया। इसके परिणामस्वरूप, हिंदी साहित्य ने न केवल साहित्यिक काव्य रूपों को अपनाया, बल्कि इन रचनाओं ने समाज में सकारात्मक बदलावों को भी प्रेरित किया।

लोक साहित्य का हिंदी कविता, उपन्यास और नाटक में योगदान :

हिंदी कविता, उपन्यास और नाटक में लोक साहित्य का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है। हिंदी कविता में लोक साहित्य के प्रभाव ने कविता के विषय, शैली और भाषा को प्रभावित किया। उदाहरण के लिए, राजस्थानी, भोजपुरी, और अवधी जैसी भाषाओं और बोलियों का प्रयोग हिंदी कविता में हुआ, जिससे यह कविता जनमानस से अधिक जुड़ी। हिंदी के प्रमुख कवियों जैसे कि निराला, पंत, शमशेर, और महादेवी वर्मा ने लोक साहित्य से प्रेरित होकर अपनी काव्य रचनाएँ कीं, जिसमें सामाजिक चेतना और राष्ट्रीयता के विचारों का समावेश था। लोक साहित्य का हिंदी उपन्यास में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिंदी उपन्यासों में भारतीय ग्रामीण जीवन, लोक संस्कृति और सामान्य जन के संघर्षों को प्रमुखता से चित्रित किया गया। प्रेमचंद के उपन्यासों जैसे गोदान और कर्मभूमि में लोक साहित्य के तत्वों का स्पष्ट रूप से चित्रण किया गया। इन उपन्यासों में समाज के विभिन्न वर्गों और उनकी समस्याओं को दर्शाते हुए लोक साहित्य की जड़ों को गहराई से समाहित किया गया।

निष्कर्ष :

हिंदी साहित्य में लोक साहित्य का महत्व अत्यधिक गहरा है, क्योंकि यह समाज की सच्चाईयों, मान्यताओं और संवेदनाओं का अद्वितीय चित्रण प्रस्तुत करता है। लोक साहित्य का मूल उद्देश्य समाज के विभिन्न पहलुओं को सरल, सटीक और प्रभावी रूप में प्रस्तुत करना है, जो न केवल साहित्यिक दृष्टि से, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से भी अत्यधिक मूल्यवान है। लोक साहित्य की स्वीकार्यता ने समय के साथ साहित्य की धारा में परिवर्तन किया है और इसे मुख्यधारा के साहित्य के रूप में सम्मान प्राप्त हुआ है। लोक साहित्य ने हिंदी कविता, उपन्यास, नाटक और अन्य साहित्यिक विधाओं में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह साहित्य शास्त्रीय साहित्य से पृथक होते हुए, जनजीवन और आम लोगों के विचारों को साहित्य के काव्यात्मक रूप में

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 6, November-December 2024 |

प्रस्तुत करता है। हिंदी साहित्य के विभिन्न कालखंडों में लोक साहित्य को जगह मिली है, जिससे इसके महत्व को समझा जा सकता है। लोक साहित्य का ऐतिहासिक विकास, उसका साहित्यिक प्रभाव, और उसकी आधुनिक हिंदी साहित्य में स्वीकार्यता ने उसे एक अनिवार्य साहित्यिक विधा बना दिया है। लोक साहित्य का हिंदी साहित्य में योगदान न केवल साहित्यिक रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक धारा के विकास में भी एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता है। लोक साहित्य के तत्वों ने समकालीन साहित्यकारों को प्रभावित किया है, और यह जनमानस के संघर्षों, सपनों और आकांक्षाओं का दर्पण बनकर वर्तमान समाज के साक्षात्कार का माध्यम बना हुआ है।

संदर्भ सूची :

1. चतुर्वेदी, रघुवीर – हिंदी लोक साहित्य का साहित्यिक महत्व, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016
2. शुक्ल, कैलाश – लोक साहित्य और उसका सामाजिक प्रभाव, साहित्य अकादमी, वाराणसी, 2003
3. शर्मा, प्रमोद – हिंदी साहित्य में लोक साहित्य का स्थान, प्रभात प्रकाशन, इलाहाबाद, 2018
4. सिन्हा, अशोक – लोक साहित्य और उसका इतिहास, भारतीय ज्ञानपीठ, कानपुर, 2011
5. पांडेय, गिरीश – भक्ति काव्य और हिंदी लोक साहित्य, पेंगुइन बुक्स, जयपुर, 2017
6. कुमार, संजय – हिंदी लोक साहित्य में नारीवाद की भूमिका, ग्रंथनगर, लखनऊ, 2015
7. वर्मा, सुरेश – हिंदी साहित्य में लोककाव्य का योगदान, शिक्षा प्रकाशन, दिल्ली, 2019
8. त्रिपाठी, बिपिन – हिंदी लोक साहित्य की शास्त्रीय साहित्य से तुलना, हिंदी साहित्य भवन, पटना, 2014

IJARASEM

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |